हमारी लड़ाई अधूरी है

–पंडित दीनदयाल उपाध्याय

कश्मीर का मोर्चा भारत का राष्ट्रीय मोर्चा है। 1947 में भारतीय सेना के जवानों ने वहाँ दुश्मन के हौसले पस्त किए। कश्मीर को अपनी जेब में समझकर चलने वाले स्व. मुहम्मद अली जिन्ना का ख्वाब पूरा न हो सका। उसी मोर्चे पर फिर से एक बार 1953 में भारत के लाडलों को अपना बलिदान देना पड़ा। इस बार विपक्षी बाहर का नहीं, बल्कि अपने ही वे बन्धु थे, जो दुर्नीति के शिकार होकर शेख अब्दुल्ला के भारत–विरोधी षड्यंत्र को पूरा करने में सहायक हो रहे थे। भारत सरकार चाहे आँख बंद कर वास्तविकता से मुँह मोड़ लें, किन्तु भारत के राष्ट्रीय तत्व सतत जागरूक हैं। सतत जागरूकता ही स्वतंत्रता का मूल्य है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में कश्मीर का शंतिपूर्ण सत्याग्रह, उनका बलिदान और उसके परिणामस्वरूप भारत–कश्मीर एकता हाल के इतिहास की घटनाएँ हैं। मोर्चे पर अभी तक हमने अनेक लड़ाईयां जीती हैं, किन्तु युद्ध अभी शेष है। एक–तिहाई कश्मीर अभी शत्रु के अधिकार में है। भारत से अलग रहकर अपने मंसूबे पूरे करने की योजना बनाने वाले कम्युनिस्ट कश्मीर में सक्रिय हैं तथा वहाँ के शासन की छत्रछाया में पनप रहे हैं; राष्ट्रपति का कश्मीर सम्बन्धी आदेश अधूरा है; जम्मू में वहाँ के राष्ट्रीय तत्वों की अवहेलना ही नहीं, अपितु उन्हें दबाने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। अतः हमारी लड़ाई पूरी नहीं हुई।

डॉ. मुखर्जी बलिदान दिवस
23 जून, 1954
लखनऊ

कश्मीर अलगाव बनाम जुड़ाव
लेखक : रामशंकर अग्निहोत्री
प्रकाशक : जागृति प्रकाशन, नोएडा–201301 से उद्धृत